P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वर्तमान में शैक्षिक शोध की आवश्यकता एक अध्ययन

भावना तिवारी
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जे. एस. विश्वविद्यालय,
शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश
भारत

सारांश

ज्ञान की किसी भी क्षेत्र में नवीन तथ्यों एवं सिद्धान्तों या विचारो की खोज के लिए ईमानदारी पूर्वक किए गए खोज या अनुसंधान को शोध कहा जाता है, किसी विद्वान ने अपनी पुस्तक 'The Romance of Research' में शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है, कि निरीक्षण या अवलोकन कियें गये विषय का संभावित वर्गीकरण सामान्यीकरण एवं विश्वसनीयता एवं वैद्यता के तथ्यों पर खरा उतारकर उसे सुव्यवस्थित ढंग से व्यवस्थित करना है । वर्तमान में शोध की महत्ता बढ़ गयी है सरकारे भी शोध में गुणवत्तात्मक वृद्धि करने की ओर अग्रसर है और उनका प्रयास है जो भावी शोधार्थी है उनको भी अनुदान देकर उनके किये गये Project या शोध में किसी भी प्रकार की कठिनाई न आवें और शोघ के क्षेत्र में शोधार्थी बेहतर कार्य कर सके।

व्यापक अर्थ में अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना होता है । अनुसंधान अंग्रेजी के Research शब्दों से बना है जो मुख्यतः दो शब्दों के संयोजन Re +search क्रमशः दोबारा या पुनः खोज करने से है। अर्थात जिसकी पूर्व में खोज हो चुकी है।

मुख्य शब्द : वर्तमान, शैक्षिक, शोध, आवश्यकता, अध्ययन।

प्रस्तावना

शोध में अनुसंधान अंग्रेजी भाषा के रिसर्च शब्द का हिन्दी रूपान्तरण शोध, अनुसंधान, गवेषण, अन्वेषण ,खोज आदि शब्दो में किया जाता है।

रिसर्च शब्द वास्तव में फ्रांसीसी भाषा के रिसर्च शब्द से बना है जिसका अर्थ है देखना (To look) खोज करना आदि। इस अर्थ में शोध शब्द का व्यवहार सबसे पहले ऐतिहासिक अनुसंधान के संबध में किया गया अतीत की ऐतिहासिक घटनाओं की खोज करने की जिज्ञासा ने शोध कार्य को जन्म दिया और इसी आधार पर चलकर वैज्ञानिक शोध का जन्म हुआ शिक्षा अनुसंधान भारत में बहुत हाल ही में शुरू किया गया और अभी बाल्यावस्था में है इसका कारण है कि शिक्षा के अध्ययन को विषय के रूप में विश्वविद्यालय स्तर पर चौथे दशक के पहले नहीं रखा गया । यद्यपि शिक्षा अनुसंधान की आवश्यकता को सबसे पहले 1913 में शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव में स्वीकार किया गया था,परन्तु शिक्षा अनुसंधान के विकास हेतु विधिवत प्रयास 1947 में भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही किये गए।

अनुसंधान के द्वारा ही उन विधियों, पद्धतियों परिस्थितियों की खोज सम्भव है जो शिक्षा की प्रक्रिया को सबल बनाने में सहयोग दे सकती है दस दृष्टिकोण वाले अनुसंधान का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक ही महत्व है।

अनुसंधान (Research) शब्द मे प्रत्येक अक्षर मे अर्थ या कार्य को निम्न कार्य से व्यक्त कर सकेः–

R- Rational way of Thinking (तार्किक ढंग से चिन्तन)
E- Exhanstive treatment (परिश्रम के साथ करना)
S- Search for solutions (समाधान खोजना)
E-Exactness(शुद्धता)
A-Analytic view(विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण)
R- Reletionship of facts (तथ्यों में सम्बंध)
C-Critical observation (आलोचनात्मक निरीक्षण)
H- Honesty in work (ईमानदारी पूर्वक कार्य करना)

अनुसंधान शब्द का अर्थ सभी विज्ञान विषयों के लिए एक सा है।

अध्ययन का उददेश्य

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है उसका मूल उद्देश्य व्यक्ति में ऐसे सामाजिक परिवर्तन लाना होता है जो सामाजिक विकास एवं व्यक्ति के जीवन को उत्कृष्ट बना सके और उसे समाज में अपने को सिद्ध कर सके। शैक्षिक

अंनुसधान का उद्देश्य नवीन तथ्यों की खोज करना तथा नवीन ज्ञान की वृद्धि करना जिससे बालकों का विकास एवं उनका परिमार्जन हो सकें। शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तथ्यों की खोज करना, नवीन ज्ञान की वृद्धि करना।

शैक्षिक अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य बालकों का विकास एवं उनका परिमार्जन करना है।

शिक्षा एक समाजिक प्रक्रिया है उसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना होता है जो सामाजिक विकास एवं व्यक्ति के जीवन को उत्कृष्ट बना सकें और उसे समाज में अपने को सिद्ध करने का कार्य प्रशस्त हो सके

शैक्षिक अनुसंधान का क्षेत्र

शैक्षिक अनुसंधान का क्षेत्र क्या हो, इसका आधार क्या हो, इसका समाधान कर पाना मुश्किल है।

एन0 सी0 आर0 टी0 ने अपने लेख में "Education Research and innovations" निम्नलिखित समस्याओं को शिक्षा अनुसंधान की प्राथमिकता सूची में रखा था।

1. शिक्षा संस्थाओं के वातावरण का अध्ययन ।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ।
3. शिक्षा में नेतृत्व।
4. शिक्षा प्रशासन
5. तुलनात्मक शिक्षा।
6. अध्यापक प्रशिक्षण।
7. शिक्षा संस्थाओं के कार्यक्रम एवं उनकी प्रभाविकता का अध्ययन ।
8. जीवन मूल्यों की शिक्षा।
9. शिक्षा का व्यावसायीकरण ।
10. छोटे बालकों के रख रखाव एवं उनकी शिक्षा की व्यवस्था

उपरोक्त क्षेत्र अति विस्तृत एवं व्यापक है। शिक्षा के क्षेत्र में शोधरत या अध्ययनरत शोधार्थी से यही अपेक्षा है कि ज्ञान में जो रिक्त है उसी पहलुओं पर अपना अध्ययन केन्द्रित करें जिससे समाज को एवं नई दिशा मिल सके।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकताएँ

शिक्षा प्रणाली को और उपयुक्त बनाने के लिए सभी क्षेत्रों की भाँति शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे उपयोगी और विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त हो सके ।

शिक्षा में विज्ञान व कला दोनों ही विद्यमान है। चूँकि शिक्षा ज्ञान का पिंड है इसमें वैज्ञानिक ज्ञान भी जुड़ना चाहिए जिससे ज्ञान में वृद्धि व सुधार हो । कला के रूप में शिक्षा द्वारा ज्ञान का प्रभावी वितरण होता है शिक्षा जगत में बदलती विचार धारा के कारण शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान आवश्यक हो गया है शिक्षा के विकास पर अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन ने अपनी रिर्पोट ''Learning to Be'' में कहा है अब शिक्षा एक सीमित विषय नहीं रह गया है जिसे पढ़–समझ लिया जाय। बल्कि अब यह ऐसी प्रक्रिया बन गया है जिसके द्वारा मानव अपनी बात कह सकने, अपने अनुभवों पर संसार से वार्ता करने और प्रश्न पूछने की क्षमता प्राप्त करें और हर समय अपने ज्ञान में वर्धन को तत्पर रहें।

मनोवैज्ञानिक शोध से भी यह पता चलता है कि मानव अपूर्व है और सतत् प्रयत्नों से अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकता है।

वर्तमान में वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के कारण बहुत बड़ा बदलाव आया है शिक्षा की ऐसी भूमिका होनी चाहिए जिससे बदलते परिवेश को सहज ही ग्रहण किया जा सकें।

आज प्रत्येक क्षेत्र में बात का अनुभव किया जा रहा है कि यदि ज्ञान के विस्फोट को समझना है, प्रगति की होड़ में आगे बढ़ना है तो उसका एकमात्र साधन वैज्ञानिक अनुसंधान है क्योंकि विश्व में हुई सारी प्रगति विभिन्न क्षेत्रों में किये गये अनुसंधान के कारण है।

शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की गयी है।

1 ज्ञान के विकास में सहायक।
2 अध्यापक के लिए उपयोगी।
3 सत्य ज्ञान की खोज करने में उपयोगी।
4 उद्देश्य प्राप्ति में सर्वोत्तम साधन।
5 मानव समाज को नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करने में सहायक।

शिक्षा की प्रक्रिया के दायरे से हटकर अन्य सन्दर्भो में शिक्षा अनुसंधान की बहुत अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है । शिक्षा तंत्र आत्मनिर्भर एवं स्वतंत्र नहीं है उसकी व्यवस्था एवं गति विधियों पर समाज के कई दूसरे तंत्रो का प्रभाव पड़ता है अतः यह जानना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा इन्हें कहाँ तक और किस प्रकार प्रभावित करते है।

शिक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान का सूत्रपात 1950 के दशक में हुआ शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम पी0एच0डी0 1943 में बम्बई विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गयी । उसके पश्चात अनुसंधान के क्षेत्र का विस्तार होता रहा ।

सन् 1943 से 2017 के बीच जो प्रगति शैक्षिक शोध के क्षेत्र में हुई इस विस्तृत विवरण सात शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षणों में मिलता है जो क्रमशः 1974, 1979, 1987, 1991, 2002, 2016,

प्रथम सर्वेक्षण में 462 पी0एच0डी0 तथा 269 प्रोजेक्ट स्तर के अध्ययनों का विवरण है । दूसरे सर्वेक्षण में उन अध्ययनो का विवरण है जो 1972 से 1978 के बीच पूरे हुए इससे 839 अनुसंधानों का वर्णन है जो शिक्षा के 17 क्षेत्रों में किये गए थें।

पी0एच0डी0 स्तर के अध्ययनों का व्यौरा इस प्रकार है।

तालिका 1.1

दशकवार पी0एच0डी0 अध्ययन

वर्ष	संख्या
1941–50	10
1951–60	63
1961–70	234
1971–80	850
1981–90	940
1991–2000	1020
2001–2011	1260

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 1.2

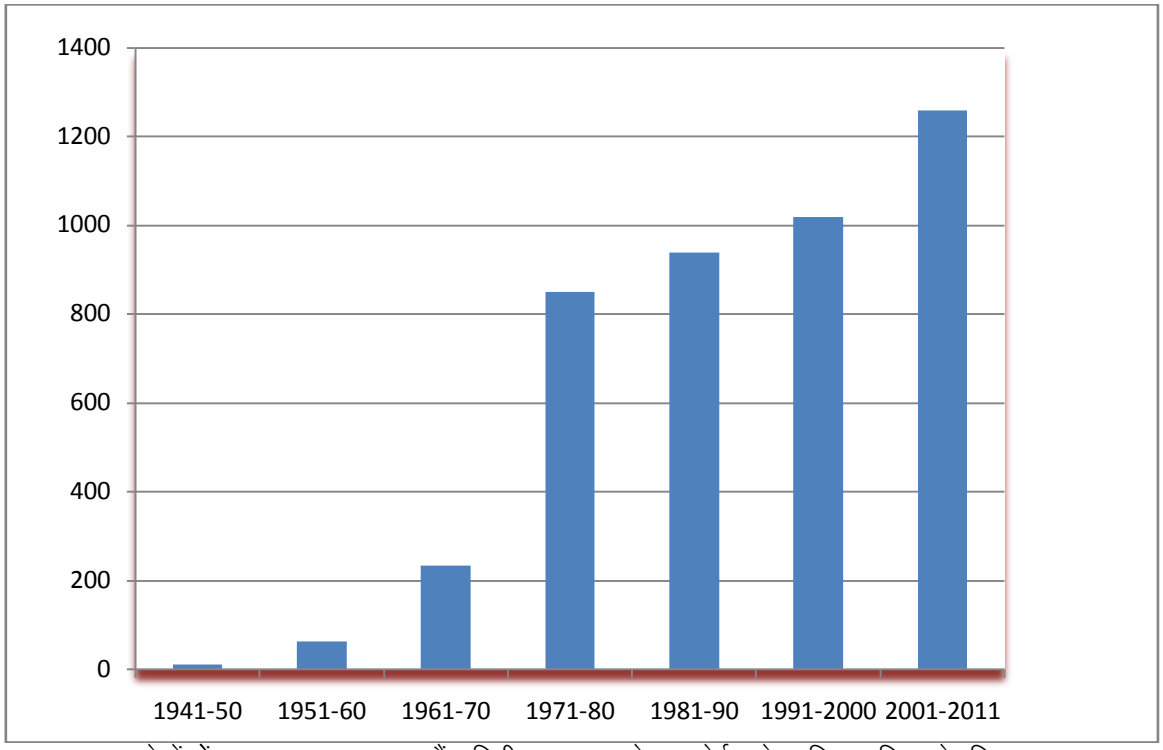

कुल 19 क्षेत्रों में अध्ययन सम्पन्न हुए हैं। द्वितीय सर्वेक्षण में कुल 17 क्षेत्र थे । चतुर्थ सर्वेक्षण (1991) में कुल 4703 अनुसंधानो का उल्लेख है जो 29 क्षेत्रों में बटे हुए है । इनमें से 3289 पी0एच0डी0 स्तर के तथा 1414 प्रोजेक्ट स्तर के अध्ययन है। इन 3250 पी0एच0डी0 अनुसंधानो में 2270 शिक्षा विभागों में तथा 1017 अन्य विभागों जैसे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, आदि विभागों में संपन्न हुए।

निष्कर्ष

इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के अनेक क्षेत्रों में अनुसंधान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है यह भी कहा जा सकता है कि संख्यात्मक दृष्टिकोण से शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान का तीव्र गति से विकास हो रहा है। कुछ विद्वानों का मानना है कि शिक्षा के क्षेत्र में संख्यात्मक दृष्टि से पी0एच0डी0 धारक तैयार किये जा रहे है लेकिन उसमे भी गुणवत्ता नहीं है क्योंकि अभी तक ऐसा कोई शोध विषय जिसको विश्व पटल पर सराहा गया हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, अरूणः मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल वनारसीदास बग्लों रोड दिल्ली (2007)।

कॉल,लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0नई दिल्ली (2005)

भटनागर, आर0पी0: शिक्षा अनुसंधान लायल बुक डिपों,मेरठ (2003).

राय, पारसनाथ : अनुसंधान परिचय नवरंग आफसेट प्रिन्टर्स आगरा, (2002)

शर्मा, आर0 ए0 : शिक्षा अनुसंधान,आर लाल बुक डिपो मेरठ, (2007)